शुकर

मौलाना जलील अहसन नदवी रह. राहे अमल हिन्दी.

‘नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.’

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

शुकर की हकीकत ये है की आदमी सोचता है की अल्लाह ने मेरे साथ ये मामला किया की दुनिया मे आने से पहले पेट की अंधेरियों मे हवा और गिजा पहुंचाई. फिर जब दुनिया मे आया तो उसने मेरी परवरिश के क्या क्या इन्तेजामात किये मे बिल्कुल लाचार और बेबस था जुबान थी न हाथ पैर थे फिर मेरे रब ने मुझे पाला पोसा मेरे जिस्म को ताकत दी सोचने समझने और बोलने की कुव्वत दी, फिर आसमान व जमीन की पूरी मशीन मेरे लिये हर वकत चला रहा है ताकी मुझे खुराक और हवा मिले. एक तरफ अपनी लाचारियां और कमजोरियां देखता है और दूसरी तरफ अल्लाह की रहमत की ये बारिश देखता है तो उसके दिल मे अपने मुहसिन की मुहब्बत जाग उठती है, तब उसकी जुबान पर उसकी तारीफ का कलमा जारी होता है और जिस्म की सारी ताकतें मालिक को खुश करने और उसकी खुशी की राह मे दौडने

के लिये वक्फ हो जाती है. इसी कैफियत और जज्बे का नाम शुकर व हम्द है और ये तमाम भलाईयों की जान है. इसी जज्बे को जिन्दा करने और उभारने के लिये किताबे और रसूल आते रहे है और इसी जज्बे को खत्म करना शैतान की असली मुहिम (जंग) है. (देखिये सूरह आराफ रूकू 2). शुकर का जज्बा जब आदमी के दिल मे जाग उठता है तो उसकी जिन्दगी बन्दगी की राह पर लग जाती है.

1} अबु दाउद, रावी हज़रत मुआज बिन अनस रदी.
खुलासा- रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया की जो शख्स खाना खाये और फिर ये कहे शुकर है अल्लाह का, जिसने मुझे ये खाना दिया बगैर मेरी अपनी तदबीर और ताकत के तो उससे जो गुनाह पहले हो चुके है माफ हो जायेंगे.

2} अबु दाउद, रावी हज़रत अबू सईद खुदरी रदी.
खुलासा- रसूलुल्लाह ﷺ जब कोई नया कपडा पहनते, अमामा, कुर्ता या चादर तो उसका नाम लेकर फरमाते ऐ अल्लाह तेरा शुकर है तूने मुझे ये पहनाया मे तुझसे इस के

खैर का तलबगार हूं और जिस गर्ज से ये बनाया गया है उसके बेहतर पहलू का तलबगार हूं और मे तेरी पनाह मे अपने आपको देता हूं इस कपडे की बुराई से, और उस मकसद के बुरे पहलू से जिसके लिये ये बनाया गया है.

3} अबु दाउद, रावी हज़रत अली बिन रबीआ रदी.
खुलासा- मैने हज़रत अली बिन अबी तालिब (रदी) को देखा की उनके पास सवारी का जानवर लाया गया तो रकाब मे पांव रखते वकत फरमाया "अल्लाह के नाम से" फिर जब उसकी पीठ पर जम कर बैठ गये तो फरमाया की अल्लाह का शुकर है जिसने हमारे काबू मे इसको दिया, हम अपनी ताकत के बल पर इसे काबू मे नहीं ला सकते थे. और हम अपने रब के पास पलट कर जाने वाले है.

4} बुखारी, रावी हज़रत हूजेफा रदी.
खुलासा- रसूलुल्लाह ﷺ जब रात को सोने के लिये लेटते तो अपना हाथ रूखसार (गाल) के नीचे रखते और फरमाते ऐ अल्लाह मे तेरे नाम के साथ मरता हूं और जिन्दा होता हूं और

जब जागते तो ये फरमाते थे की शुकर है अल्लाह का की उसने हमे जिन्दा किया मौत देने के बाद और हमको फिर जीकर उसके पास जाना है.

5} मुस्लिम, रावी हज़रत अबू सईद खुदरी रदी.

खुलासा- मुआविया (रदी) ने बताया की एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ घर से निकल कर आये तो देखा की कुछ लोग हल्का बनाये हुवे बैठे है आप ﷺ ने पूछा की साथियो तुम यहां क्यों बैठे हो और क्या कर रहे हो? उन्हों ने कहा की हम यहां बैठ कर अल्लाह को याद कर रहे है, उसके एहसानात जो उसने हम पर किये हम उसे याद कर रहे है, हम उस एहसान को याद कर रहे है की अल्लाह ने हमारे पास अपना दीन भेजा और हमे ईमान लाने की तौफीक दी और हमको सीधा रास्ता दिखाया.

6} तिर्मेज़ी, रावी हज़रत अबू मूसा अशअरी रदी.

खुलासा- रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया की जब किसी बन्दे की कोई औलाद मरती है तो अल्लाह तआला अपने फरिश्तों से

पूछता है क्या तुमने मेरे बन्दे की औलाद की जान कब्ज कर ली? वो कहते है हां, फिर वो उनसे पूछता है तुमने उसके जिगर के टुकडे की जान कब्ज कर ली? वो कहते है हां, फिर वो उनसे पूछता है की मेरे बन्दे ने क्या कहा? वो कहते है इस मुसीबत पर उसने तेरी तारीफ की और इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिउन कहा, तब अल्लाह कहता है मेरे इस बन्दे के लिये जन्नत मे एक घर बनाओ और उसका नाम बैतुल-हम्द (शुकर का घर) रखो.

7} मुस्लिम, रावी हज़रत सुहेब रदी.
खुलासा- रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया की मोमिन की हालत भी अजब होती है, वो जिस हाल मे भी होता है उससे खैर और भलाई ही समेटता है, और ये खुशनसीबी मोमिन के सिवा किसी को नहीं हासिल है, अगर वो तंगदस्ती, बीमारी और दुख की हालत मे होता है तो सबर करता है, और जब वो कुशदगी की हालत मे होता है तो शुकर करता है और ये दोनों हालतें उसके लिये भलाई का सबब बनती है.
8} मुस्लिम, रावी हज़रत अबू हूरेरा रदी.

खुलासा- रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया की वो लोग की जो तुमसे माल व दौलत और दुनियावी शान व शौकत मे कम दर्जे के है उनकी तरफ देखो (तो तुम्हारे अन्दर शुकर का जज्बा पैदा होगा) और उन लोगों की तरफ न देखो जो तुमसे माल व दौलत मे और दुनियावी साज व सामान मे बढे हुवे है ताकि जो नेमतें तुम्हें इस वकत मिली हुई है वो तुम्हारी निगाह मे हकीर (कमतर) न हो वर्ना खुदा की नाशुक्री का जज्बा उभर आयेगा.